करनी है, इसलिए राजा बनना है। प्रधानमंत्री मंदिरों में जाएं या ना जाएं, पूजा करें या न करें, इससे धर्म राज्य का कोई सम्बन्ध नहीं।

राष्ट्रधर्म निभाने वाला राजा हमेशा सहिष्णु ही रहेगा, असहिष्णु बन ही नहीं सकता। लेकिन अगर निधर्मी राजा की बात करें तो जीवन पशुवत् हो जाता है। वहां कर्त्तव्य का कोई स्मरण नहीं रह जाता।

सेक्युलरिज्म की कल्पना ने तब जन्म लिया था जब समय संसार में एक पंथिक सम्प्रदाय ने सत्ता हाथ में लेकर दूसरे सम्प्रदाय के साथ अन्याय प्रारम्भ किया। भारत में तो कभी साम्प्रदायिक राज्य रहा ही नहीं। जब गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा–जब जब धर्म का ह्रास होता है – तब तब मैं आऊंगा– तो धर्म के ह्रास से उनका तात्पर्य मंदिरों के विनाश से नहीं था। जब–जब यहां कर्त्तव्यों का, दायित्वों का, मूल्यों का क्षरण होगा, तब–तब मैं आऊंगा, यह था उनका तात्पर्य। फिर मैं यहां धर्म की स्थापना करूंगा, ऐसा कहा भगवान श्रीकृष्ण ने। यहां धर्म राज्य बनाने का तात्पर्य है – ऐसा राज्य जो जनता को सुख, सम्पन्नता व गौरवमयी ऊर्जा प्रदान करेगा।

हम यह मॉडल विश्व के सम्मुख प्रस्तुत करना चाहते हैं। यह भारत की जिम्मेदारी है। राज्यधर्म का पालन करने वाली जनता, विश्व के सामने एक ऐसा मार्ग रखना चाहते हैं। यहां 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' का मंत्र जब दिया गया तो हम 'बहुजन सुखाय, बहुजन हिताय' से बहुत आगे चले गये। यह कल्पना हमेशा प्रासंगिक है। यह शाश्वत है।

जब राष्ट्रधर्म का पालन होता है, पृथ्वी सुरक्षित रहती है, पर्यावरण की रक्षा होती है, सामाजिक न्याय स्थापित होता है, मानवाधिकार सुरक्षित रहते हैं। अपने यहां अभ्युदय और निश्रेयस दो शब्दों का प्रयोग होता है। इस देश का अभ्युदय धर्म राज्य में है। इस देश की आध्यात्मिक शक्ति राष्ट्रधर्म के पालन में है। राष्ट्रधर्म का लक्ष्य राष्ट्र का परम वैभव है। राज्यधर्म का लक्ष्य विश्व के सामने आदर्श व्यवस्था को प्रस्तुत करना है। यह भारत का दायित्व है। इसमें हम जैसे सामान्य जनों की सहभागिता जब तक नहीं होगी, तब तक इन दोनों धर्मों का पालन करना कठिन है। इसलिए यहां का जनसामान्य राष्ट्रीय बने और प्रशासन सुराज देने वाला बने, ऐसी कामना है।

❑